एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सॉवा की वैज्ञानिक खेती से मूल्य संवर्धन

(*डॉ. सुरेश कुमार कनौजिया[1] एवं डॉ. नरेन्द्र रघुवंशी[2])
[1]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, बक्सा जौनपुर प्रथम
[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, वाराणसी
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sureshkumar1973.73@gmail.com

हमारे देश में सॉवा का भात बनाकर प्रयोग किया जाता है । यह अत्यन्त पाचक होने के कारण रोगी व्यक्तियों व प्रसूता माताओं का एक महत्वपूर्ण आहार है। पौष्टिकता की दृष्टि से इसमें 9.2 प्रतिशत प्रोटीन, 65.5 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेड, 4.5 प्रतिशत वसा और 9.7 प्रतिशत तक रेशा होता है। इसकी प्रोटीन 40 प्रतिशत तक पाचनशील होती है।

हमारे देश में सॉवा मुख्य रूप से मध्य प्रदेश,उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा बिहार प्रान्तों में उगाया जाता है। उत्तर प्रदेश में इसकी खेती लगभग 1.25 लाख हे0 भूमि में की जाती है, जिससें लगभग 0.82 लाख टन उत्पादन मिलता है। सॉवा की खेती उत्तर प्रदेश में वाराणसी,बलिया, आजमगढ़, मिर्जापुर आदि क्षेत्रो में ज्यादा की जाती है।

भूमि –सॉवा की फसल सूखारोधी एवं बाढ़रोधी क्षमता होती है। अतः हल्की भूमियों से लेकर दलदली भारी भूमियों में भी सॉवा की फसल उगाई जा सकती है। लेकिन सॉवा के लिऐ हल्के किस्म की मिट्टियॉ अधिक उपयुक्त होती है। ऐसी भूमि ,जिससे जल धारण तथा उसके संरक्षण की काफी क्षमता हो, सॉवा के लिए अच्छी रहती हैं।

उन्नतशील प्रजातियॉ

के0–1_ यह किस्म 100–110 दिन में पककर तैयार हो जाती है । प्रति हे0 8 –10 कुन्तल दाने की उपज प्राप्त हो जाती है ।

टाइप–25 :– यह प्रजाति पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त है। 8–10 कुन्तल प्रति हे0 उपज प्राप्त हो जाती हैं। फसल की अवधि 90 दिन है ।

टाइप –46 :–यह किस्म लगभग 90–95 दिन में पककर तैयार हो जाती है । मध्य उत्तर प्रदेश में उगाने के लिए यह बहुत अच्छी किस्म है। एक हे0 से लगभग 10–12 कुन्तल उपज मिल जाती है। फसल खेत में गिरती नहीं है। सूखा एवं बाढ़ रोधक है इसकी बालियॉ मोटी होती हैं।

बी0.एल0–1 :– यह किस्म उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में उगाने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त पायी गई है । एक हे0 मे लगभग 10–12 कुन्तल उपज मिल जाती है।

बी0 .एल0–8 मादिरा– यह किस्म भी उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों में उगाने के लिए उपयुक्त पाई गई है । यह लगभग 90 –100 दिन में पकती है प्रति हे0 लगभग 12–15 कुन्तल उपज मिलती है।

आई0 पी0–149 :– यह किस्म लगभग 80–85 दिन में पककर तैयार होती है। इसके दाने हल्के भूरे रंग के होते हैं। एक हे0 में 12 –15 कुन्तल दाने मिल जाते हैं।

आई0 पी0 एम0–151 यह किस्म लगभग 80–85 दिन में पककर तैयार होती है। पौधों की ऊॅचाई 150 सेमी0 तक होती है । एक हे0 मे 12–15 कुन्तल दाने मिल जाते हैं।

खेत की तैयारी :– वर्षा होने के बाद खेत को मिट्टी पलटने वाले हल से जोत दें। उसके बाद 2–3 जुताई सामान्य हल या हैरो से करके पाटा लगा दें, ताकि खेत समतल हो जाए।

बोने का समयः– इसकी बुआई का समय जून का अन्तिम तथा जुलाई का प्रथम सप्ताह उपयुक्त है। 15 जुलाई के बाद बोनी करने से रबी फसल की तैयारी का समय कम मिल पाता है।

बुवाई की विधि :– अधिकतर किसान सॉवा की बुवाई छिटकवॉ विधि से करते हैं। बुवाई का ये तरीका सही नहीं है। बीजों को पंक्ति में 20–30 सेंमी0 की दूरी पर बने कूँड़ों मे बोना चाहिए। पोधों के बीच की दूरी 15 सेमी0 और बीज की गहराई 3–4 सेमी0 रखना चाहिए। ज्यादा क्षेत्र में बोने के लिए बैलों से चलने वाली सीडड्रिल प्रयोग में लाई जा सकती है। बुवाई के लिए 8–10 किग्रा0 बीज प्रति हे0 पर्याप्त होता है।

खाद तथा उर्वरकः–बुवाई के पूर्व खेत तैयार करते समय भूमि में 25 गाड़ी अच्छी सड़ी हुई कम्पोस्ट या गोबर की खाद प्रति हे0 प्रयोग करें। रासायनिक उर्वरकों का जहां तक हो सके, प्रयोग न करे। यदि जरूरी हो तो मिट्टी परीक्षण के आधार पर प्रति हे0 50 किग्रा0 नत्रजन, 30 किग्रा0 फास्फोरस तथा 20 किग्रा0 पोटाश डालना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पूर्व खेत मे मिला दें। नत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 20–25 दिन बाद खेत मे बिखेरें।

निराई–गुड़ाई :– खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2–3 निराई–गुड़ाई आवश्यक है। निराई–गुड़ाई की दृष्टि से पंक्तियों मे बोई गई फसल सुविधाजनक होती है।

फसल चक्र :– सॉवा के बाद रबी में गेहूँ , जौ, चना, मटर, मसूर, अलसी आदि फसल उगा सकते हैं।

कीट व उनका नियंत्रण

बिहार रोयेंदार सूँडी :– यह सूँडी पत्तियों को हानि पहुंचाती है। कभी –कभी तने पर भी आक्रमण करती है । इसकी रोकथाम के लिए प्रति हे0 बी0एच0सी0 5 प्रतिशत के 25–30 किग्रा0 पाउडर का बुरकाव करें अथवा 0.15 प्रतिशत थायोडान 35 ई0सी0 का 600–800 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

टिड्डा ग्रासहॉपर :– यह भी पत्तियों को हानि पहुचाता है। बचाव केलिए बी0एच0सी0 10 प्रतिशत धूल की 25 किग्रा0 मात्रा का प्रति हे0 प्रयोग करे।

तना छेदक व तना मक्खी :– इसके नियंत्रण के लिए 15 ग्राम फोरेट 10 प्रतिशत या कार्बोफ्यूरान 8 प्रतिशत प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।

सफेद ग्रव :– इससे बचाव के लिए 25 किग्रा0 बी0एच0सी0 10 प्रतिशत को गोबर की खाद मे मिलाकर खेत मे बराबर बिखेर दें।

रोग व उनका नियंत्रण

मृदुरोमिल आसिता :– इस रोग के कारण पत्तियों पर पीली धारियां उभरती है, जो बाद में सफेद हो जाती है और पत्तियां सूख जाती हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए रोग ग्रस्त पौधो को उखाड़कर जला दें ।

कंडुला रोग :–इसमे पूरी बालें काले चूर्ण जैसे पदार्थ से ढक जाती है। रोग ग्रस्त पौधा अन्य पौधों से ऊँचा होता है। इसकी रोकथाम के लिए बीजों को बोनो से पूर्व 5 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान वाले जल में 10–15 मिनट तक उपचारित करके बोयें । बोने से पूर्व बीजोंको 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज दर से एग्रोसान जी0एल0 से उपचारित कर लेना चाहिए ।

किट्ट या गेरूई :– यह एक कवक जनित रोग है इसमें पत्तियों की ऊपरी सतह पर काले चकत्ते बन जाते है । इसकी रोकथाम के लिए रोग रोधी किस्में बोयें । डाइथेन एम0–45 के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव भी लाभप्रद पाया गया है।

कटाई–मड़ाई :– फसल ढाई से साढ़े तीन माह में पक कर तैयार हो जाती है । इसकी कटाई अगस्त के अन्त में या सितम्बर के शुरू में की जाती है। पौधो को हॅसिये से काटें और बैलों से मड़ाई करके दाना निकाल लें।

उपज :– सॉवा की फसल से दाना 10–15 कुन्तल प्रति हे0 , पुआल 20–23 कुन्तल प्रति हे0 और हरा चारा 40–50 कुन्तल प्रति हे0 मिल जाता है।